भारत में गठबंधन सरकार का प्रभाव

चंदन दास[1], संजय कुमार[2], प्रवीण कुमार साहू[3], गरीबीन मस्करे[4], केदार कुमार[5]
[1]अतिथि व्याख्याता समाजशास्त्र विभाग, रानी दुर्गावती शासकीय महाविद्यालय साल्हेवारा (KCG)
[2]अतिथि व्याख्याता राजनीति विज्ञान विभाग, शासकीय नवीन महाविद्यालय पेंडरावन जिला दुर्ग छत्तीसगढ़
[3]अतिथि व्याख्याता राजनीति विज्ञान विभाग, रानी दुर्गावती शासकीय महाविद्यालय साल्हेवारा(KCG)
[4]अतिथि व्याख्याता समाजशास्त्र विभाग, रानी दुर्गावती शासकीय महाविद्यालय साल्हेवारा (KCG)
[5]अतिथि व्याख्याता समाजशास्त्र विभाग, हिड़मा मांझी शासकीय महाविद्यालय कटेकल्याण जिला दंतेवाड़ा छत्तीसगढ़

I. प्रस्तावना

लोकतांत्रिक देश में जनता अपने प्रतिनिधियों को चुनती है, जो केंद्र एवं राज्य सरकारों को बनाते हैं। भारतीय लोकतंत्र में बहुदलीय व्यवस्था है। इसलिए कई बार दोनों दल स्पष्ट रूप से सहमत नहीं होते। यह राजनीतिक अस्थिरता को जन्म दे सकता है। ऐसे हालात में गठबंधन सरकार बनाई जाती है। भारतीय राजनीति में पिछले कुछ दशकों से गठबंधन सरकार का प्रभाव रहा है। ऐसे में, 'गठबंधन सरकार' की विशेषताओं, उसकी सफलताओं और असफलताओं को समझना आवश्यक है।

गठबंधन की आवश्यकता :
गठबंधन उस प्रक्रिया को कहते हैं। जब दो या दो से अधिक लोग एक विशिष्ट लक्ष्य को पूरा करने के लिए अल्पकाल के लिए अस्थायी रूप से एकजुट होते हैं। राजनीति में गठबंधन दो या दो से अधिक दलों का एक समूह है। रोजर स्कंटन ने "ए डिक्शनरी ऑफ पॉलिटिक्स थॉट" में गठबंधन को परिभाषित करते हुए कहा कि विभिन्न दलों या राजनीतिक पहचान रखने वाले लोगों का आपसी समझौता राजनीति में गठबंधन कहलाता है।

गठबंधन की स्थिति :
गठबंधन की उत्पत्ति में समाज का प्रमुख परिवर्तन भी महत्वपूर्ण है। जब कोई समाज परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है, तब गठबंधन अनिवार्य हो जाता है। फिर, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक और ऐतिहासिक परिस्थितियां राजनीति को जन्म देती हैं। आज कोई समाज मजबूत नहीं है। भारत में, आज की तारीख में, यह यथार्थ सत्य है। भारतीय समाज आज जाति, धर्म, अमीर-गरीब (आर्थिक) और जीवन शैली के आधार पर तो विभाजित है साथ ही यह सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विभाजनों से निर्वाचन को प्रभावित करता है।
कभी- कभी एक ही राजनीतिक दल का बहुमत पाना मुश्किल हो जाता है। क्योंकि एक राजनीतिक दल को इस विवाद को समाप्त करना मुश्किल है। राष्ट्रीय दल भी क्षेत्रीय राजनीति में सक्रिय नहीं होते। क्षेत्रीय दल या व्यक्तिवाद हावी होता है। यही कारण है कि मतदाता अपने हितों के अधिक अनुकूल व्यक्ति को अपना मत देना पसंद करते हैं। वे यह नहीं देखते कि देश में किसी पार्टी को बहुमत मिलेगा या नहीं। इन हालात में मत बंट जाता है और कोई भी दल बहुमत नहीं पाता, इसलिए गठबंधन अनिवार्य है।

II. गठबंधन की प्रमुख विशेषताएं

देश में जब राजनीतिक दल को आवश्यक बहुमत प्राप्त नहीं होता इस स्थिति में गठबंधन की आवश्यकता होती है वर्तमान समय में विश्व के अनेक देशों में जैसे जापान आयरलैंड इंडोनेशिया फिनलैंड ब्रिटेन इजरायल आदि देशों में गठबंधन की सरकार साजा सहयोग से कार्य योजना बनती है वहां की सरकारों के द्वारा लिया गया निर्णय राजनीतिक गठबंधन एवं सहयोग से लिया गया निर्णय होता है यह निर्णय देश की जनता के हित में लिया गया सामूहिक निर्णय होता है गठबंधन की सरकारों में अनिश्चित हमेशा बनी हुई होती है क्योंकि यह विभिन्न राजनीतिक दलों के निजी एवं राजनीतिक स्वार्थ भी होते हैं क्योंकि राजनीतिक पार्टियों अपने निजी स्वार्थ के हिसाब से ही गठबंधन में सम्मिलित होती है प्रायः गठबंधन में राजनीतिक दल चुनाव परिणाम के बाद ही करती हैं यह

गठबंधन केवल सरकार बनाने के लिए एवं मंत्रीमंडल गठन करने के लिए होता है गठबंधन के पश्चात कई राजनीतिक दल एवं राजनेता के बीच राजनीतिक संघर्ष के पश्चात गठबंधन से अपनी समर्थन वापस ले लेती है इस प्रकार गठबंधन की सरकार में हमेशा अस्थिरता बनी रहती है कभी कभी सरकार गठबंधन से 5 वर्ष अपनी सरकार चाला पाती है कभी यह कुछ दिनों में ही सरकार गिर जाती है इसमें हमेशा अनिश्चिता बनी होती है

गठबंधन के प्रकार:
गठबंधन मुख्य रूप से दो तरह के होते हैं:
चुनाव पूर्व गठबंधन (Pre-poll Alliance):
जब पार्टियां चुनाव से पहले ही यह तय कर लेती हैं कि वे मिलकर चुनाव लड़ेंगी। वे सीटों का बंटवारा करती हैं और जनता के सामने एक संयुक्त मोर्चे के रूप में जाती हैं। (उदाहरण के लिए: बिहार में भाजपा और जदयू का NDA गठबंधन)। ऐसे गठबंधनों को जनता द्वारा अधिक स्थिर माना जाता है क्योंकि उनके पास पहले से एक समझ होती है।

III. चुनाव बाद गठबंधन (POST-POLL ALLIANCE)

जब पार्टियां चुनाव तो अलग-अलग लड़ती हैं, लेकिन नतीजे आने के बाद जब किसी को बहुमत नहीं मिलता, तब वे सत्ता हासिल करने के लिए 'अवसरवादिता' या 'मजबूरी' में हाथ मिला लेती हैं। ऐसे गठबंधन अक्सर कम स्थिर होते हैं।

राज्यों में गठबंधन की स्थिति:
भारत में विभिन्न राष्ट्रीय राजनीतिक दलों के द्वारा लोकसभा जैसे आम चुनाव में जब अपनी सरकार बनाने के लिए चुनाव में भाग लिया जाता है लेकिन कई बार मतदाताओं तथा आम जनता के पसंद के कारण ये दल अपनी सरकार बनाने में असफल रहते हैं जिसके समाधान के रूप में इन राजनीतिक दलों के द्वारा गठबंधन का तरीका अपनाया जाता है। ये राजनीतिक दल आपसी साजा सहमति से अपनी सरकार बनाने के लिए तथा अपनी स्वार्थ को पूरा करने के उद्देश्य से गठबंधन का सहारा लेते हैं। वर्तमान में संपूर्ण भारत में गठबंधन की अवधारणा विभिन्न राज्यों के द्वारा अपनाया जाता है।
गठबंधन की स्थिति को जानने के लिए हम संपूर्ण भारत को कुछ भागों में बांट सकते हैं जैसे:- *उत्तर भारत* इसके अंतर्गत उत्तर प्रदेश ,दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश तथा उत्तराखंड जैसे राज्य आते हैं।[1]

पूर्वी भारत इसके अंतर्गत बिहार, पश्चिम बंगाल, झारखंड ,मेघालय, मणिपुर ,अरुणाचल प्रदेश, असम, सिक्किम नागालैंड तथा त्रिपुरा जैसे राज्य आते हैं।[2]

मध्य भारत इस क्षेत्र के अंतर्गत मध्य प्रदेश तथा छत्तीसगढ़ को शामिल किया जाता है।[3]

पश्चिम भारत इस क्षेत्र के अंतर्गत महाराष्ट्र ,गुजरात, राजस्थान तथा गोवा के भाग आते हैं।[4]

दक्षिण भारत इसके अंतर्गत तमिलनाडु ,आंध्र प्रदेश, कर्नाटक ,केरल तथा तेलंगाना के क्षेत्र को शामिल किया जाता है।[5]

*2024 लोकसभा चुनाव में 05 राज्यों में यथा:- आंध्र प्रदेश ,अरुणाचल प्रदेश ,उड़ीसा, हरियाणा तथा महाराष्ट्र में एनडीए या भाजपा गठबंधन की सरकार स्थापित हुआ है।

*क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का महत्व: - भारत में विभिन्न राज्यों के विधानसभा तथा विधान परिषद के चुनाव में राष्ट्रीय और क्षेत्रीय राजनीतिक दलों द्वारा चुनाव में सामूहिक एवं पृथक तौर पर अपने-अपने उम्मीदवारों के माध्यम से चुनावी मैदान में उतरते हैं जिससे अपनी सरकार बना सके ज्यादातर राज्यों में राष्ट्रीय स्तर के राजनीतिक दलों को पूर्ण बहुमत नहीं मिलता है क्योंकि संबंधित राज्यों में वहां की क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का बहुमत रहता है जिससे इन क्षेत्रीय दलों का महत्व बढ़ता ही जा रहा है तथा स्थानीय मतदाता उनको अपनी पहली पसंद के रूप में चुन भी रहे हैं।ये क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के द्वारा अपने क्षेत्र का चहुँमुखी विकास हो रहा है जिससे इन राज्यों में क्षेत्रीय दलों का महत्व बढ़ता ही जा रहा है।

*भारत के विभिन्न राज्यों में विगत कुछ वर्षों में विधानसभा चुनाव संपन्न हुआ है जिसके परिणाम घोषित होने के पश्चात कोई एक राजनीतिक दलों को अपनी सरकार बनाने के लिए पूर्ण बहुमत प्राप्त नहीं हुआ तत्पश्चात यह राजनीतिक दलों के द्वारा गठबंधन के विकल्प को चुना गया इसमें शामिल राज्यों की चर्चा करें तो सर्वप्रथम आंध्र प्रदेश की क्षेत्रीय दल TDP(तेलुगु देशम पार्टी) तथा JSP (जनसेना पार्टी) इन दोनों ही राजनैतिक दलों ने अपनी पहचान बनाई तथा बहुमत नहीं मिलने पर सरकार बनाने के लिए गठबंधन जैसे विकल्प का सहारा लिया।त्रिपुरा जैसे राज्य में विधानसभा/ विधान परिषद चुनाव के बाद वहां भाजपा(NDA) गठबंधन ने अपनी सरकार

बनाया। बिहार में नीतीश कुमार ने एनडीए गठबंधन के साथ अपनी सरकार बनाने में सफलता हासिल किया। नागालैंड में भी स्थानीय या क्षेत्रीय पार्टी नेशनलिस्ट डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव पार्टी(NDPP) ने अपनी सरकार बनाई।मेघालय में भी राष्ट्रीय पार्टी (कांग्रेस) के होने के बाद भी NPP दल ने भाजपा व अन्य दलों के साथ मिलकर गठबंधन की सरकार बनाई। सिक्किम में कोई राष्ट्रीय स्तर के राजनीतिक दल नहीं होते हुए भी क्षेत्रीय राजनीतिक दल सिक्किम डेमोक्रेटिक फ्रंट ने एनडीए के साथ गठबंधन के परिणाम स्वरूप साझा सरकार बनाने में सफलता प्राप्त किया। महाराष्ट्र जैसे बड़े राज्य में किसी राष्ट्रीय व क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का सरकार नहीं बना अपितु एनडीए तथा शिवसेना की गठबंधन द्वारा सरकार स्थापित किया गया।

IV. केंद्र सरकारों में गठबंधन की स्थिति

भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के समय गठबंधन की स्थिति बहुत कमजोर थी क्योंकि स्वतंत्रता के समय कांग्रेस की महत्वपूर्ण भूमिका रही जिसके कारण कांग्रेस का एक-दल प्रभुत्व था किसी अन्य राजनीतिक दल को राष्ट्रीय स्तर पर किसी प्रकार का उभरने का मौका नहीं मिला किंतु धीरे-धीरे जनता का कांग्रेस के प्रति रुचि कम होने लगी और जनता के द्वारा राजनीतिक विकल्प ढूंढना शुरू कर दिया यह परिवर्तन 1977 के आम चुनाव में स्पष्ट बहुमत किसी भी राजनीतिक दल को नहीं मिला जिससे केंद्र में पहली बार गठबंधन की सरकार की स्थापना हुई इस गठबंधन की सरकार में राजनीतिक एवं नीतिगत विचारों में भिन्नता के बावजूद भी दो राजनीतिक पार्टियों आपस में मिलकर इंदिरा गांधी द्वारा लगाया गया आपातकाल के विरोध में एकजुट हुए पहले गैर कांग्रेसी प्रयोग जिसमें जनता पार्टी गठबंधन मोराजी देसाई के नेतृत्व में विभिन्न दलों जैसे जनसंघ सोशलिस्ट का ढीला ढाला गठबंधन सरकार बनी किंतु आंतरिक कला के कारण यह गठबंधन अल्पकालिक रहा। 1980 से 1989 के बीच इंदिरा गांधी तथा राजीव गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस की फिर से वापसी हुई इस समय गठबंधन की स्थिति बिल्कुल अनुपस्थित रहा फिर पुनः 1989 से लेकर 2014 तक गठबंधन का युग रहा जिसमें किसी एक राजनीतिक पार्टी को पूर्ण बहुमत प्राप्त नहीं हुआ किंतु यह गठबंधन पूर्णता स्थाई गठबंधन के रूप में चला जिसमें 1989 से 1991 राष्ट्रीय मोर्चा वी.पी.सिंह के नेतृत्व में यह बाहरी समर्थन पर टिकी हुई सरकार थी ।बीजेपी और वाम दलों के बाहर से समर्थन दिया।मंडल आयोग के क्रियान्वयन और समर्थन वापस लिए जाने से यह अल्पकालीन रहा ।इसके पश्चात 1991 से 1996 कांग्रेस की बीपी नरसिम्हा राव कांग्रेस को बहुत कम सीट मिली लेकिन उसे धीरे-धीरे बहुमत हासिल हो गया ।यह अल्पमत की सरकार द्वारा चलाई गई भारत की सबसे स्थिर सरकार थी। 1996-1998 अस्थिर गठबंधन की सरकार एच.डी. देवगौड़ा और इंद्र कुमार गुजराल के नेतृत्व में संयुक्त मोर्चा (UF)की सरकार बनी यह सरकार कांग्रेस के बाहरी समर्थन पर टिकी थी और अत्यंत अस्थिर थी। 1996 में तीन प्रधानमंत्री ने शपथ ली। इसके पश्चात 1998 से 2004 राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) अटल बिहारी वाजपेई जी के द्वारा पहला सफल और दीर्घकालिक गठबंधन जिसमें वाजपेयी जी ने गठबंधन धर्म की अवधारणा को लोकप्रिय बनाया।यह एक सफल बहुदल गठबंधन था जिसमें सरकार काफी स्थिर रही। इसके पश्चात 2004 से 2014 तक संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए) मनमोहन सिंह के नेतृत्व में कांग्रेस को वामपंथी के बाहरी समर्थन पर तथा क्षेत्रीय दलों के सहयोग से सरकार बनी। 2014 में नव प्रभुत्व काल भारतीय जनता पार्टी(BJP)का एक नया प्रभुत्व स्थापित हुआ 2014 से लेकर 2024 के चुनाव तक (एनडीए) राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन से बीजेपी की सरकार बनी जिसमें 2014 से 2019 बीजेपी का अकेले पूर्ण बहुमत मिला फिर भी बीजेपी (एनडीए) के बैनर तले शासन किया। बीजेपी लगातार दूसरी बार 2019 से 2024 अकेले पूर्ण बहुमत की सरकार प्राप्त की जिसमें गठबंधन की क्षेत्रीय दलों का महत्व कम हुआ और भाजपा केंद्रीय मजबूती पर रही। 2024 से लेकर वर्तमान समय में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) की सरकार गठबंधन के रूप में कार्य कर रही है 2024 में बीजेपी को पूर्ण बहुमत प्राप्त नहीं हुआ वर्तमान में टी.डी.पी जे.डी.यू जैसे प्रमुख सहयोगियों की भूमिका गठबंधन में महत्वपूर्ण है।

V. गठबंधन सरकार का महत्व

गठबंधन सरकार भारतीय राजनीति और दुनिया के कई अन्य लोकतंत्रों में इसका बहुत महत्व है।इससे व्यापक प्रतिनिधित्व मिलता है।गठबंधन सरकार में अलग-अलग विचारधाराओं, क्षेत्रों और समुदायों के प्रतिनिधि शामिल होते हैं। इससे समाज के विभिन्न वर्गों की आवाज़ सरकार तक पहुँचती है, जो एक अकेले दल की सरकार में शायद मुमकिन न हो।इसके साथ ही निरंकुशता पर रोक लगती है जब सत्ता एक ही दल के हाथ में होती है, तो उसके तानाशाहीपूर्ण निर्णय लेने की संभावना बढ़ जाती है। गठबंधन सरकार में मुख्य दल को अपने सहयोगियों की राय लेनी पड़ती है, जिससे सत्ता का विकेंद्रीकरण होता है और सरकार मनमानी नहीं कर

पाती।साथ ही सहमति की राजनीति किसी भी बड़े फैसले या कानून को लागू करने के लिए सभी सहयोगी दलों के बीच आम सहमति बनाना जरूरी होता है। इससे 'आम राय' वाली राजनीति को बढ़ावा मिलता है, जो लोकतंत्र के लिए बहुत स्वस्थ है। गठबंधन से क्षेत्रीय हितों की रक्षा होता है गठबंधन सरकारों में अक्सर क्षेत्रीय दल निर्णायक भूमिका निभाते हैं। इससे केंद्र सरकार का ध्यान राज्यों की विशिष्ट समस्याओं और विकास की ओर अधिक जाता है, जिससे देश का संतुलित विकास होता है। गठबंधन विविधता का सम्मान है भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में, जहाँ भाषा, संस्कृति और धर्म के आधार पर बहुत भिन्नता है, गठबंधन सरकार एक "लघु भारत का स्वरूप पेश करती है, जहाँ हर किसी की हिस्सेदारी महसूस होती है।

VI. गठबंधन की चुनौतियां

गठबंधन सरकार के फायदे हैं, वहीं कुछ चुनौतियां भी होती हैं जैसे अस्थिरता सहयोगियों के समर्थन वापस लेने पर सरकार गिरने का डर रहता है। इसके साथ निर्णय लेने में देरी लंबी चर्चाओं के कारण महत्वपूर्ण निर्णय रुक सकते हैं।साथ ही तुष्टिकरण कभी-कभी छोटे दलों को खुश रखने के लिए कड़े फैसले नहीं लिए जाते।

VII. निष्कर्ष

गठबंधन सरकार भारत के लोकतंत्र की एक अनिवार्य आवश्यकता बन गयी है।गठबंधन एक ओर यह शासन को अधिक लोकतांत्रिक और समावेशी बनाती है, वहीं दूसरी ओर यह निर्णय लेने की प्रक्रिया को जटिल और अस्थिर भी बनाती है। इसकी सफलता पर हमेशा संदेह बना रहता है सरकार स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने पर कई बार सोचती रह जाती है जिससे सही फैसला सही समय पर नहीं हो पाते यदि सरकार सही निर्णय ले और जनता की अपेक्षाओं पर खरा उतरे तो जनता को गठबंधन वाली सरकार पर विचार न करना पड़े। गठबंधन के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पक्ष हैं गठबंधन क्षेत्रीयता सामाजिकता राजनीतिक महत्वाकांक्षा राजनीतिक दलों के राजनेताओं की आवश्यकताओं पर निर्भर करता है।

सन्दर्भ

[1] अरिहन्त परिसकेशन्स इंडिया लिमिटेड योगेशचंद जैन
[2] प्रतियोगिता दर्पण
[3] कम्पीटिशन सक्सेस रिव्यू 2000
[4] इण्डिया टूडे
[5] कॉनिकल
[6] इण्टरनेट
[7] पेपर दैनिक भास्कर।
[8] हिंदुस्तान टाइम्स